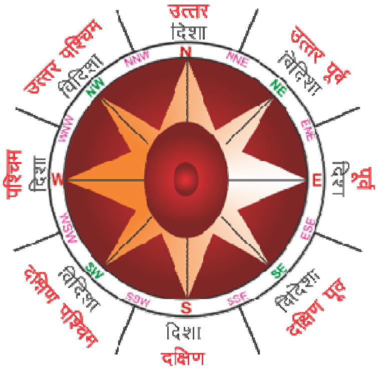

‘वास्तु’

GHAR VASTU

वास्तु शास्त्र में ईशान कोण (North/East), नैत्रिर्त्य कोण (South/West), वायव्य कोण (North/West), अग्नि कोण (South/East) का काफी महत्व है। वास्तु शास्त्र की आधारशिला इसी पर निर्भर करती है। सामान्यता एक वास्तु के अनुसार घर में कुछ विशेष स्थान निर्धारित किए गए हैं जो निम्न हैं। नीचे चित्र में कई स्थानों को एक या दो से अधिक बार भी दर्शाया गया है परन्तु इस बात का ध्यान रखें जो स्थान कहीं पर नही दर्शाया गया है उसका दोष लगेगा जिसका परिहार करना या करवाना अनिवार्य है।

एक घर के साधारण स्थान, निम्न स्थानों पर होने चाहिए

विशेष दिशाओं में मुख्य द्वार होने पर कुछ विशेष दिशा निर्देश।

पूर्वमुखी द्वार (East facing door)

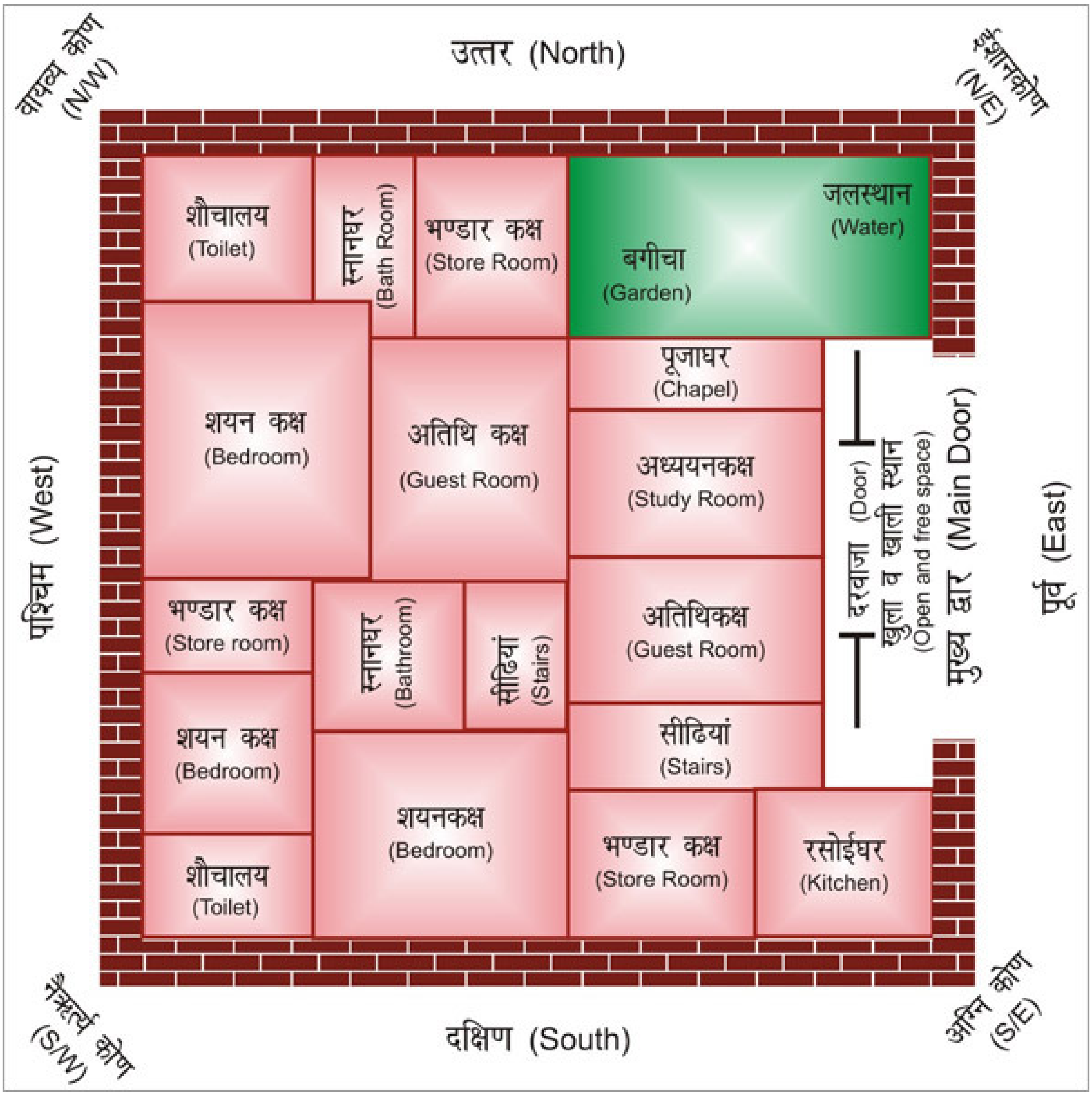

उत्तरमुखी द्वार (North facing door)

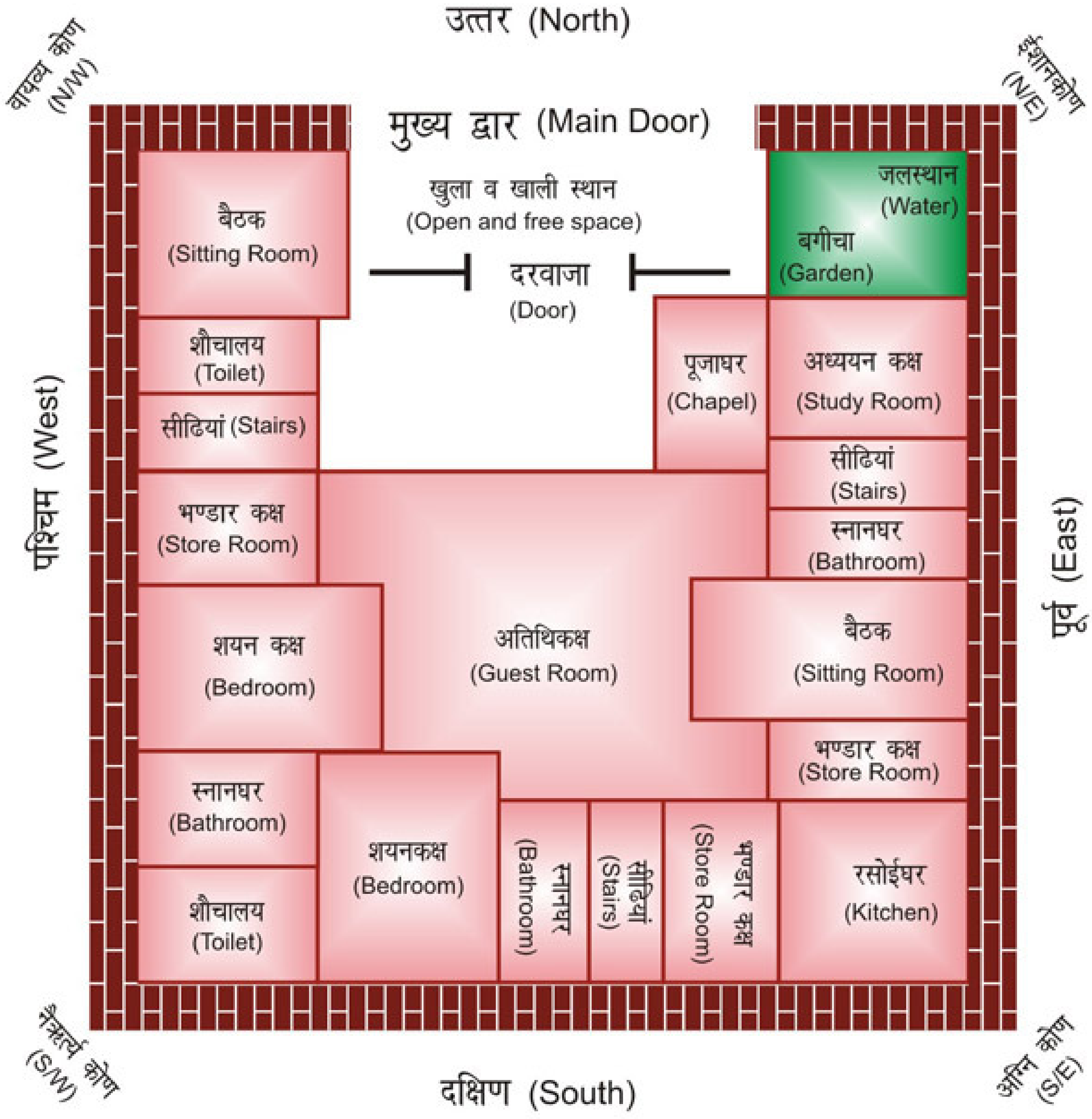

पश्चिममुखी द्वार (West facing door)

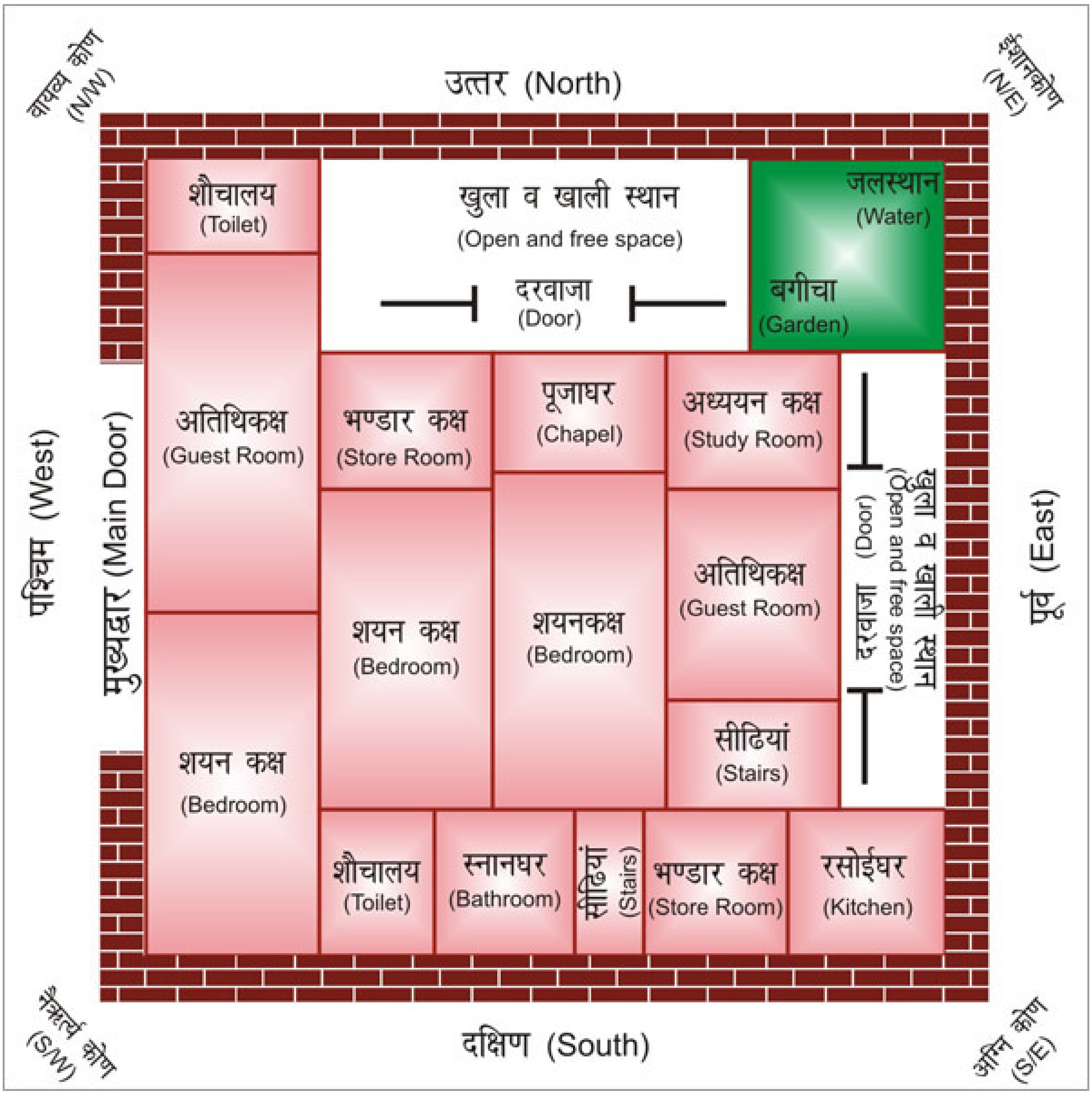

दक्षिणमुखी द्वार (South facing door)

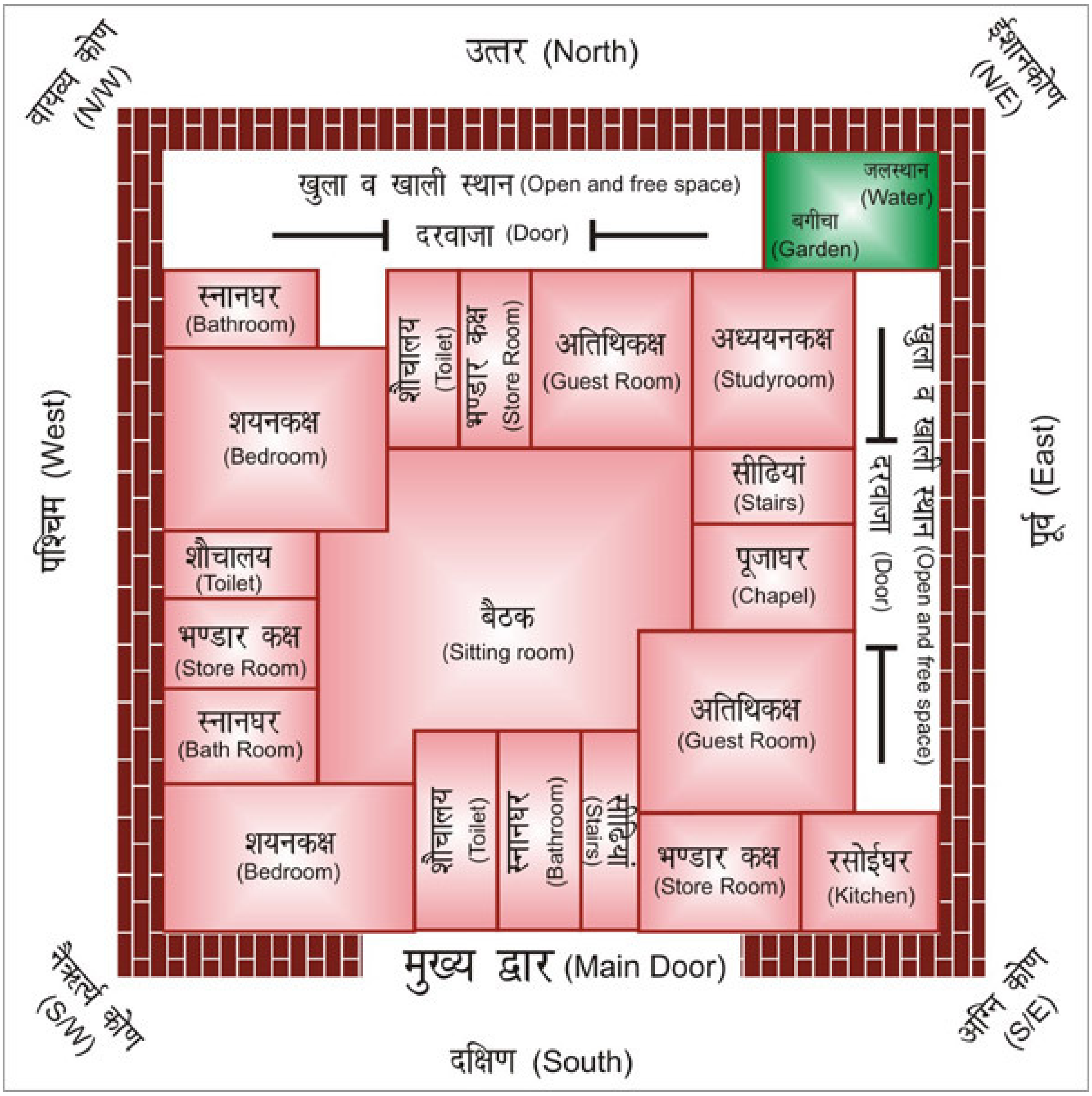

अधिक सूक्ष्मता से अध्ययन करने के लिए श्री वराहमिहिर ने आठ वीथियां, अट्ठारहा प्रकार के वास्तु और ग्यारह प्रकार के वेधों के बारे में बताया है।

आठ प्रकार की वीथियां या रूकावटें:–

1. धन वीथी 2. जल वीथी 3. भूत वीथी 4. वैश्वानर वीथी 5. गो वीथी 6. नाग वीथी 7. गण वीथी 8. यम वीथी ।

यह सारी वीथियां भूमि के एक कोण से दूसरे कोण की तरफ झुकाव, उठाव, ढलान आदि पर आधारित हैं। साधारणतः यह सारी वीथियां बहुत बड़े क्षेत्र पर लगाने के लिए हैं।

18 प्रकार के वास्तु जो निम्न प्रकार से हैं :– वे विभिन्न प्रकार के शुभ–अशुभ, नकारात्मक और सकारात्मक असर ड़ालकर मनुष्य को सुखी या दुखी करते हैं।

1. पितामह वास्तु, 2. सुपथ वास्तु, 3. रोगकर वास्तु, 4. पुण्यक वास्तु, 5. अपथ वास्तु, 6. दीर्घायु वास्तु, 7. अर्गल वास्तु, 8. स्वमुख वास्तु, 9.श्येनक वास्तु, 10.शमशान वास्तु, 11. ब्रह्म वास्तु, 12. स्थावर वास्तु, 13. चर वास्तु, 14. शाण्डुल वास्तु, 15. सुस्थान वास्तु, 16. सुतल वास्तु, 17. स्थण्ड़िल वास्तु, 18. श्वमुख वास्तु।

11 प्रकार के वेध–जिनका मतलब है बाधाएं, रूकावटें (ज्यादातर इसका प्रयोग निवास स्थान के आस–पास की वस्तुओं पर आधारित होता है)

1.देवालय वेध 2. वृक्ष वेध 3. स्थिति वेध 4. कोण वेध 5. दिशा वेध, 6. चित्र वेध 7. आकार वेध 8. रूप परिवर्तन वेध 9. ध्वज वेध 10. न देखने योग्य वेध 11. पंक्ति वेध।

VASTU TIPS

वास्तु से संबंधित कुछ साधारण ध्यान रखने वाली बातें:—

1. यदि संभव हो सके तो भूमि का परीक्षण करवा लें और किसी शुभ मुहूर्त पर ईशान कोण (North/East) या उत्तर (North) या पूर्व (East) या अग्नि कोण (South/East) से घर बनाना आरंभ करें।

2. घर और ऑफिस एक ही स्थान पर न हो। इससे लाभ कम होता है।

3. घर के अन्दर कांटेदार पौधे न रखें। इससे कटुता, लड़ाई—झगड़े होते हैं ।

4. गृहस्वामी, सोने (Sleeping) के लिए दक्षिण (South) दिशा का प्रयोग करे या फिर नैऋित्य (South/West) दिशा का प्रयोग करे।

5. घर का रंग मन को लुभाने वाला होना चाहिए, चुभने वाला नही।

6. शौचालय उत्तर (North), ईशान (North/East) और पूर्व (East) दिशाओं में नही होना चाहिए।

7. Bedroom में Television नही होना चाहिए, इससे पति–पत्नी एक दूसरे को पूरा समय नही दे पाते और यह झगड़े का विषय भी बन सकता है।

8. धन का स्थान उत्तर दिशा में होना चाहिए। क्योंकि यहां के स्वामी कुबेर हैं।

9. घर में जानवरों की फोटो और मूर्तियां नही होनी चाहिए। जबकि हंस की फोटो समृद्धि को लाती है।

10. पूजा करने के लिए सबसे अच्छा स्थान ईशान कोण (North/East) है। अनेकों स्थानों पर भगवान की मूर्ति–फोटो लगाने से हानि भी हो सकती है।

11. बच्चों के पढ़ने के लिए स्थान ईशान कोण (North/East) और पूर्व (East) दिशा के बीच में होना चाहिए।

12. पूर्व (East) और उत्तर (North) दिशा की जगह खुली और खाली होनी चाहिए, बन्द नही होनी चाहिए।

13. भारी सामान के लिए सबसे अच्छा स्थान नैत्रिृत्र्य (South/West) दिशा है।

14. घर बनाते वक्त पंच तत्वों (Five signs) का ध्यान रखें।

15. दक्षिण दिशा को बंद करके रखें।

16. आयताकार (Rectangle) या वर्गाकार (Square) भूखंड शुभ माने गए हैं, जबकि त्रिकोण (Triangle) भूखंड को रहने के लिए अशुभ माना गया है।

17. शिलान्यास करते वक्त ध्रुव दर्शन अवश्य करें।

18. घर का मुख्य दरवाजा (Main Door) एक ही रखें।

19. दक्षिण मुखी दरवाजा (South facing door) नही होना चाहिए, अगर है तो दर्पण (Mirror) लगवाएं।

20. ईशान कोण में यदि पूजा का स्थान न हो तो वहां दीपक अवश्य जलाएं या रोशनी रखें।

21. रसोई घर, (South/East) में होना चाहिए। क्योंकि यह अग्नि कोण है।

22. मकान का केन्द्र खुला व खाली रखें।

23. दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा, सीढ़ियों के नीचे और रसोई घर में पूजा घर कभी न बनाएं।

24. (Bedroom) में आस्था से जुड़ी तस्वीर नही होनी चाहिए। सौंदर्य की तस्वीरें होनी चाहिए।

25. घर के केन्द्र में फूलों का गुलदस्ता रखें जिससे मन शान्त रहता है।

26. कोशिश करें घर के आस–पास पाकर, गूलर, बहेड़ा, आम, नीम, कांटेवाले पौधे, दूध वाले सभी प्रकार के पौधे न हों। अगर हैं, तो परिहार करवाएं।

27. खिड़की–दरवाजे बड़े होने चाहिए।

28. ईशान कोण (North/East) में जल अवश्य रखें।

29. घर में छोटे फूल वाले पौधे ईशान कोण (North/East) में लगाए जा सकते हैं।

30. बिजली का मीटर आदि अग्नि कोण (South/East) में होना चाहिए।

31. घर में खिड़की और दरवाजों की संख्या सम (Even) होनी चाहिए।

32. पानी की टंकी छत पर वायव्य कोण (North/West) दिशा के नजदीक होनी चाहिए।

33. कोशिश करें भूखंड का ढ़लाव उत्तर दिशा या पूर्व दिशा या फिर ईशान (North/East) दिशा में होना चाहिए।

34. ध्यान रहे अधिकतर दक्षिण दिशा वाले मकान ही बेचे जाते हैं।

35. बीम के नीचे सोना शुभ नही होता, बांसुरी या स्वास्तिक से दोष दूर कर सकते हैं।

36. भूखंड की लम्बाई पूर्व और पश्चिम की अपेक्षा, उत्तर और दक्षिण में अधिक हो तो श्रेष्ठ है।

37. पूर्व दिशा अधिक खाली होनी चाहिए। जबकि पश्चिम दिशा अधिक भरी हुई होनी चाहिए।

38. दक्षिण–पश्चिम की दीवारें ऊँची और उत्तर–पूर्व की दीवारें नीची होनी चाहिए।

39. भवन के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह होने चाहिए।

40. गर्भ उस स्थान को कहते हैं जो दो दीवारों के बीच की खाली जगह होती है।

41. घर के मंदिर में 9 इंच से अधिक ऊँचाई वाली मूर्तियां न रखें। यदि हैं, तो नियमों का पालन करें।

42. मंदिर के द्वार चारों दिशाओं से खुले हुए बनाए जा सकते हैं।

43. मुख्य द्वार बनाते वक्त बांयी (Left side) ओर से अधिक और दांयी (Right side) ओर से कम स्थान छोडें।

44. नया मकान बनाते वक्त नई लकड़ी का ही प्रयोग करना चाहिए।

45. मनोरंजन का सामान नैत्रिृत्र्य (South/West) कोण में होना चाहिए।

आदि